जीएं हरियो दरिखतु, छाया फल फुल सुखु ड्रिए,
तीएं सभि कारिज करे, भागवती भगतु,
रखे न रतीअ जेतिरो, माया मोह ममतु,
ऐन अभेद उपरतु, सामी रहे सुभाव में.

सच्चे हरि-भक्त के लक्षण का वर्णन करते हुए सामी साहब कहते हैं कि जिस प्रकार एक हरा भरा पेड़/वृक्ष सबको छाया, फल और फूल दे कर सुख प्रदान करता है, उसी प्रकार भगवान का भक्त अपने सभी कार्य परोपकार के लिए ही करता है। वह अपने मन में रत्तीभर, तनिक मात्र भी माया, ममता या मोह नहीं रखता। वह तो अपने स्वभाव में पूरी तरह शुद्ध, पवित्र, अभेद वैराग्य लिए हुए रहता है।

भगवान श्रीकृष्ण गीता में अर्जुन से कहते हैं कि भक्तों के चार प्रकारों में 'ज्ञानी भक्त' मेरी आत्मा है। जो मन से कभी भी भगवान से विभक्त नहीं होता, वह भक्त है। आत्मज्ञान प्राप्त होने से ज्ञानी भक्त भेद-अभेद के अंधकार को मिटाकर परमेश्वर से मिल कर एकरूप हो जाता है। ऐसा भक्त साक्षात्कारी संत जैसा होता है। अज्ञान, अविद्या, माया, मोह आदि को मन से निकाल देने के कारण उसका हृदय निर्मल बन जाता है। ऐसा परोपकारी भक्त कैसा-

सदा कृपालु दुख परिहरन, वैर भाव नहिं दोय।
छिमा ज्ञान सत भाखहीं, हिंसा रहित सु होय।।

वस्तुतः सच्चे भक्तजन अनासक्त, निरलोभी और परोपकारी होते हैं। वे निर्मल और दयालु होते हैं। उनका जीवन समाज का हित साधने में लगा रहता है। सामी साहब भी ऐसे भक्तों के, सत्पुरुषों के लक्षण बताते हुए उनकी तुलना परोपकारी वृक्ष से करते हैं, जो बिना किसी भेद-भाव के हर प्रकार से सब की भलाई करता रहता है। वृक्ष अंत तक परोपकार ही करते रहते हैं। उनकी लकड़ियाँ भी काम में आती हैं। सच्चे भक्त भी ऐसे ही होते हैं। उनका जन्म मानो परोपकार करने के लिए ही होता है। वे सूरज के समान सब पर उपकार ही करते रहते हैं।

सब को सुख पहुँचावहीं, सुहृद जनन कौ हेत।
दूरहिं सूरज उदित ज्यौं, कमलन को सुख देत।।

मनुष्य को सदा अंतर्यामी परमात्मा का सुमिरन और भजन करना चाहिए। उसे अपने अतिरिक्त धन द्वारा भूखे तथा दीन-जनों की हर प्रकार से सेवा करनी चाहिए। यही सच्चा मानव-धर्म है।

■